

असमीया लोकपर्व विवाह गीतों में नारी का स्थान: एक विहंगम दृष्टि

* सुमि शर्मा

*शोधार्थी, हिन्दी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग
इमेल-Sumisarmah1993@gmail.Com, मो. 8876133001

Received: February 23, 2026

Accepted: March 25, 2026

शोध सार

असमीया जनजीवन में सांस्कृतिक परम्पराएँ और लोकपर्व की एक विशेष महत्त्व रही हैं। इन लोक पर्व में गीत और संगीत का विशेष स्थान होता है और इन गीतों में नारी की भूमिका अत्यंत प्रमुख और सशक्त होती है। विशेष रूप से विवाह के अवसर पर गाए जानेवाले लोक गीत असमीया समाज की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। इन गीतों में न केवल नारी की भूमिका उभर कर आती है, बल्कि इन गीतों के माध्यम से नारी की भावना, उसका संघर्ष, उसकी आकांक्षाएँ और उसकी सामाजिक स्थिति भी स्पष्ट होती है। असमीया विवाह गीतों में नारी की भूमिका कई रूपों में दिखाई देती है, जिनमें वह एक बेटी, बहन, पत्नी और माँ के रूप में उभर कर सामने आती है। इन गीतों के माध्यम से समाज में नारी की भूमिका को सम्मानित किया जाता है और उसकी भावनाओं को प्रमुखता दी जाती है। विवाह असमीया समाज का एक महत्वपूर्ण लोकपर्व माना जाता है, जहाँ असमीया संस्कृति की विशेष झलक देखने को मिलती है। विवाह गीत, जिन्हें 'बिया नाम' कहा जाता है, असमीया समाज की सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर का एक अमूल्य रत्न है। असमीया विवाह गीतों में नारी की सशक्त भूमिका को कई स्तरों पर देखा जा सकता है। इन गीतों में नारी को समाज का अभिन्न अंग माना गया है और उसकी भूमिका को केंद्रीय स्थान दिया गया है। नारी न केवल एक परिवार का निर्माण करती है, बल्कि वह समाज की आधारशिला भी होती है। असमीया विवाह गीतों में नारी की भूमिका को सकारात्मक और सशक्त रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो उसे समाज में सम्मान दिलाती है।

बीज शब्द : असमीया लोक पर्व, असमीया बिया नाम, असमीया विवाह में नारी की भूमिका।

प्रस्तावना: साहित्य समाज का दर्पण है। किसी भी समाज की सभ्यता संस्कृति को उसके मौलिक साहित्य से नापा जाता है। भारतीय संस्कृति का एक अन्यतम हिस्सा है, लोक साहित्य। सामान्य जन से जुड़ा हुआ जो साहित्य है, उसे ही लोक साहित्य कहा जाता है। असमीया लोकसाहित्य में कहानी, लोकगीत, दृष्टांत, मुहावरा, लोकक्ति, मंत्र आदि आते हैं। पूर्वोत्तर भारत लोक साहित्य से समृद्ध है। असम पूर्वोत्तर भारत का एक राज्य है। लोक पर्व मौलिक है। जिसमें लोगों द्वारा निर्मित साहित्य, जाति, अस्मिता, अनेक पर्व-संस्कार बिना किसी कृत्रिमता के साथ उपलब्ध होती है। लोकपर्व में लोकगीतों का एक विशेष स्थान होती है। लोकपर्व में लोकगीतों का एक विशेष स्थान होती है। लोकगीत लोक जीवन की अभिव्यक्ति का जीवंत और सशक्त माध्यम है। समाज में लोगों द्वारा वाचन किए गए प्रचलित गीत ही लोकगीत है। जनमानस के हृदय में उल्लास, हर्ष, राग-विषाद, आशा-आंकक्षा, स्वप्न, निराशा आदि जैसे अनेक भावनाएँ इन गीतों में प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। लोकगीतों में क्षेत्र विशेष की संस्कृति, सभ्यता, परंपरा एवं वहाँ के लोकजीवन की छवि अभिव्यक्त होती है। भारत के उत्तर पूर्व स्थित असम राज्य में असमीया साहित्य में लोकगीतों की एक प्राचीन एवं समृद्ध परंपरा रही है। असमीया साहित्य में अनेक लोकगीतों का प्रचलन है। जैसे- बिहुगीत, श्रमगीत, दिहा नाम, दुर्गा नाम, तुलसी नाम, निचुकनि गीत(लोरी), देवियों के गीत, ओजा पालि, बिया नाम (विवाह गीत) आदि।

असमीया लोकपर्व: लोकसाहित्य में लोक विषयक, लोक प्रचलित, लोक निर्मित साहित्य होती है। जिसमें लोगों के बीच एक विशेष जुड़ाव के साथ संस्कारित किया जाता है। इसमें अनेक उत्सव, पर्व, अवसरों का वर्णन किया जाता है। लोक पर्व पुरुषों का अवदान है। इसमें जीवन के विभिन्न प्रसंगों से प्राप्त अनुभवों एवं सत्यों की वास्तविक अभिव्यक्ति होती है। इसमें लोगों की अकृत्रिम विचार, भावना एवं संवेदनाएँ निहित होती हैं। इसमें कृत्रिम, बनावटीपन तथा टेकनीक का कोई स्थान नहीं होता। लोक पर्व से तात्पर्य है जो लोगों में परंपरा से चली आ रही है। यह किसी भी जनजाति या समाज की पहचान होती है। हर समाज की लोकपर्व अलग-अलग होती है। हर जनजाति के रहन-सहन, वेश-भूषा, खान-पान, संगीत-नृत्य, उत्सव, भाषा पर्व आदि मिलकर एक संस्कृति का रूप लेते हैं। असमीया लोकपर्व राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और परम्पराओं को दर्शाते हैं। असम में मनाये जानेवाले अनेक पर्व असम की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता और धार्मिक आस्थाओं को दर्शाते हैं, और इन्हें पूरे उत्साह और धूमधाम के साथ मनाया जाता है। जैसे- बिहु, फाकुआ (होली), देवाली (दिवाली), अंबुबाची मेला, बाथौ पूजा, मे-डाम-मेफी आदि।

असमीया बिया नाम (विवाह गीत): सभी समाज के सामाजिक जीवन की एक महत्वपूर्ण रीति है विवाह। यहाँ के सनातनी हिन्दू अन्य भारतीयों की भांति वैदिक नियम होम तथा अग्नि को साक्षी मानकर वेद-वर्णित मंत्रोच्चार के जरिए विवाह कार्य सम्पन्न करते हैं। असमीया विवाह संस्कार एक समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा है, जो असम के लोगों के सामाजिक और धार्मिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह अनुष्ठान विभिन्न रीति-रिवाजों, परम्पराओं और रस्मों से भरा होता है, जो सदियों पुरानी संस्कृति को प्रदर्शित करता है। असमीया विवाह असम की सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह अनुष्ठान न केवल दो लोगों का मिलन

होता है, बल्कि दो परिवारों और समाजों का भी एक साथ आना होता है। शादी दो आत्माओं का मिलन है जिसे भगवान ने बनाया है। असमीया विवाह असम राज्य में या असमीया लोगों के बीच होनेवाला विवाह समारोह है। असमीया विवाह वैदिक परम्पराओं और रीति-रिवाजों पर आधारित है। बिया नाम असम में शादी समारहों से जुड़े लोकगीतों का एक पारंपरिक रूप है। इसे असमीया में 'बिया' के नाम से जाना जाता है। पारंपरिक विवाह गीत को 'बिया नाम' से जाना जाता है। यह गीत असमीया शादियों का एक अभिन्न अंग है और वैवाहिक समारहों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विवाह जीवन के महत्वपूर्ण संस्कारों में से एक है। इस लोक पर्व में कई सारी विधि-विधान नियम के दौरान अलग-अलग लोकगीत गाए जाते हैं। असमीया समाज जीवन में विवाह के दौरान अलग-अलग लोकगीतों का प्रयोग किया जाता है। जिन्हें 'बिया नाम' कहा जाता है। यह सरल और फिर भी बहुत सुंदर है। महिलाओं के द्वारा विवाह के प्रारम्भ से लेकर अंत तक मांगलिक ध्वनि उरुली से यह गीत गाया जाता है। असमीया विवाह के समय पालन किए जानेवाले हर रस्म के साथ जुड़े हुए गीत हैं। ऐसे गीत दो तरह के हैं। पहला हास्यप्रधान गीत और दूसरा लड़की के जीवन, सुख-दुःख, दाम्पत्य जीवन से संबन्धित गंभीर भावयुक्त गीत।

असमीया विवाह में नारी की भूमिका: असमीया समाज जीवन में नारी की भूमिका सर्वोपरि है। इन लोकगीतों में अधिकांश गीतों में नारी मन की भाव अनुभूति का प्रतिफलन होता है। विवाह में असमीया औरतें (आयती) विवाह गीत के माध्यम से अपनी प्रतिभा का सुंदर प्रदर्शित करती है। असमीया लोकगीतों के अधिकांश गीतों में नारी मन की भाव और अनुभूति का विशेष रूप से प्रतिफलन परिलक्षित होती है। विवाह या शादी प्रत्येक समाज और संस्कृति का एक अनिवार्य अनुष्ठान है। असमीया समाज में प्रचलित विवाह प्रथा में नारी की सर्वोपरि है। विवाह में असमीया औरतें (आयती) विवाह गीत के माध्यम से अपनी अपूर्व कवित्व प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। विवाह गीत के माध्यम से एक अनपढ़ औरत भी अपने जीवन के अभिज्ञता से समाज जीवन और सांसारिक जीवन के विविध दायित्वों को भी प्रकाशित करते हैं। शब्द प्रयोग एवं उपमा आदि अलंकार के प्रयोग, भाषा की सरलता, चित्रधर्मिता, गीति धर्मिता आदि विवाह गीत की मूल विशेषता है। इसके साथ ही असमीया समाज में प्रचलित रीति, नीति, आचार-व्यवहार और प्रकृति वर्णन भी प्रतिफलित हो उठते हैं। असमीया तथा भारतीय परंपरा विवाह गीतों की अन्यतम विशिष्टता है। असमीया विवाह गीतों में नारी की सशक्त भूमिका को कई स्तरों पर देखा जा सकता है। इन गीतों में नारी को समाज का अभिन्न अंग माना गया है और उसकी भूमिका को केन्द्रीय स्थान दिया गया है। नारी न केवल एक परिवार का निर्माण करती है, बल्कि वह समाज की आधार शिला भी होती है। असमीया विवाह गीतों में नारी की भूमिका को सकारात्मक और सशक्त रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो उसे समाज में सम्मान दिलाती है। असमीया विवाह के स्थलों में विवाह के दिन गावों की महिलाओं का एक विशेष भूमिका रहती है।

असमीया विवाह गीतों में माँ के रूप में नारी की भूमिका भी विशेष होती है। इन गीतों में नारी को माँ के रूप में परिवार और समाज की सबसे महत्वपूर्ण इकाई माना गया है। माँ की भूमिका को सामाजिक और

सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत उच्च स्थान दिया जाता है, और विवाह के अवसर पर गाए जानेवाले गीतों में इसे प्रमुखता से प्रस्तुत किया जाता है। असमीया विवाह गीतों में स्त्री चरित्रों की सशक्त एवं गरिमापूर्ण छवि नजर आती है। इसमें विवाह के लिए न की पिता बल्कि आदर्श माता को ही अनुमति लेते हैं। पितृतांत्रिक समाज व्यवस्था में नारी के लिए यह स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होता है। असमीया विवाह गीतों में स्त्री की मजबूत छवि उभरकर आती है। असमीया विवाह गीतों में असमीया समाज एवं संस्कृति में स्त्रियों की स्वतन्त्रता तथा श्रेष्ठता का भी बोध होता है। जैसे-

बिश्वामित्रई बुले हुना राम रघुवर

बाट साए आसे सीता जनकर घर

जनकर घरे सीता आसे बात साई

धनुभांगि बिया कराऊँ बिदाय दिया आय

कौशल्या बुलंत राम जुवाँ शीघ्र करि

धनु भांगि लोई आहा जानकी सुंदरी।

हिन्दी अनुवाद- विश्वामित्र बोले, सुनो राम रघुवर

राह देख रही है सीता जनक के घर में।

जनक के घर में सीता राह देख रही है।

धनुष तोड़कर विवाह करूंगा, विदा दे दीजिए माता

कौशल्या बोलती है, राम जाओ शीघ्रता से

धनुष तोड़कर ले आओ जानकी सुंदरी को।

लोकजीवन में विवाह के समय प्रत्येक वर राम और प्रत्येक दुल्हन सीता हो जाती है। विवाह गीत में औरते बार-बार 'राम राम' अथवा 'ऐ राम' शब्द का प्रयोग करते हैं। जैसे- राम राम पाणत पत्र लेखि

राम राम दिलेहि आइदेउ

राम राम पाणत पत्र लेखि दिले॥

राम राम सेई पत्रखन

राम राम पाई रामचंद्रई

राम राम अलंकार पठियाई दिले॥

हिन्दी अनुवाद: राम राम पान में चिट्ठी लिखकर

राम राम देते हैं माता (सीता)

राम राम पान में चिट्ठी लिख डाली।।

राम राम वही चिट्ठी

राम राम पाकर रामचंद्र ने

राम राम आभूषण भेज दिए।

यहाँ सीता के द्वारा राम को पत्र भेजने की और पत्र पढ़कर राम द्वारा सीता के लिए आभूषण भेजने का प्रसंग उल्लेख है।

असमीया विवाह गीतों में बेटी के रूप में नारी का चित्रण अत्यंत संवेदनशील और भावुक होता है। विवाह के समय गाए जानेवाले गीतों में बेटी की विदाई के दृश्य को मार्मिकता से प्रस्तुत किया जाता है। विदाई के समय गाए जानेवाले गीतों में एक गहरी संवेदना होती है, जिसमें माता-पिता की आशाएँ और बेटी के नए जीवन की शुरुआत की चिंता छिपी होती है। महिलाएँ लड़की के सुख-दुख दाम्पत्य गंभीर भावयुक्त गीत को उपमा देकर गाती हैं। जैसे –

कामदेउ पुत्र ओ मन नगर, गोबिंदरे नाति ओ मन नगर,

आनि दिया चित्रलेखी ओ मन नगर, आजि शुदा होबा बाणरे नगर।

हिन्दी अनुवाद –

कामदेव के पुत्र हैं मन शहर, गोविंद(कृष्ण) के पोता हैं मन शहर,

लाके दो चित्रलेखा हैं मन शहर, आज सूना हुआ वाण के शहर में।

यहाँ दूल्हे को कामदेव का पुत्र और श्री कृष्ण का नाति अनिरुद्ध कहा गया है। दुल्हन को असम की तेजपुर जिले के प्राचीन काल के राजा वाण की पुत्री उषा के साथ तुलना किया गया है। अर्थात् उषा रूपी दुल्हन की विदाई से आज पूरा वाणनगरी सूनी पड़ जाएगी।

विदाई के अंतिम पल में दुल्हन अपने हाथ में तंबाकू और पान लेकर अपने जन्मदाता पिता-माता को प्रणाम करके आशीर्वाद लेती है। विदाई के क्षणों में असमीया महिलाएँ गाती हैं कि-

हातत पाण बता लै देउताराक मातागै

मरमर देउता ऐ जाबलै उलालो

जाबरे समयत सेवाहे जनाइछो।

हिन्दी अनुवाद: हाथ में पानदान लेकर पिताजी को बुलाओ

प्यारे पिताजी जाने के लिए निकली हूँ

जाने के इस क्षण में सेवा (आशीर्वाद) ले रही हूँ।

निष्कर्ष: असमीया विवाह गीतों में नारी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुआयामी है। इन गीतों के माध्यम से नारी के विभिन्न रूपों को समाज में सम्मान और प्रतिष्ठा दी जाती है। नारी की भूमिका को समाज के निर्माण और विकास में केंद्रीय माना गया है, और विवाह गीतों में इस भूमिका को सशक्त रूप में प्रस्तुत किया गया है। नारी को बेटी, बहन, पत्नी और माँ के रूप में देखा गया है, और इन सभी रूपों में समाज में नारी को उच्च स्थान दिया गया है। असमीया विवाह गीतों में नारी न केवल एक परिवार का निर्माण करती है, बल्कि वह समाज की सांस्कृतिक धरोहर को सँभालती एवं सजाती है।

संदर्भ

1. गद्य कथा आलोक, अलख निरंजन सहाय, महावीर पब्लिकेशन्स, डिब्रूगढ़, द्वितीय संस्करण : 2012
2. संस्कृति अध्ययन, दीपेन नाथ, विद्या भवन जोरहाट, द्वितीय संस्करण : 2014
3. असमीया रामायणी साहित्य : कथावस्तु आँतिगुरि, केशदा महंत, महंत प्रकाशन, जोरहाट, 1990
4. असमर लोक संस्कृति , निर्मलप्रभा बरदलै, चन्दन दे प्रकाशन

